Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

उदय प्रकाश के साहित्य में राजनीति

Poonam*

M.Phil in Hindi

सार – ***समाज के संचालन में राजनीति महत्वपूर्ण कारक मानी जाती है। राजनीति आज वैयक्ति जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है। समाज एवं व्यक्ति से संबधित होने के कारण यह साहित्य को भी प्रभावित करती है, यह स्वाभाविक है कि साहित्यिक रचनाओं में राजनीति समाहित हो जाती है। प्रत्येक साहित्यकार स्वभाव से भावुक होता है। इसलिए वह राजनीतिक विचारों, भावों से अपनी आँखें नहीं फेर सकता है। प्राचीन और आधुनिक राजनीति में काफी अन्तर देखने को मिलता है। प्राचीन राजनीति अर्थ- राज करने की नीति अथवा पद्धति। आधुनिक राजनीति का अर्थ बदल चुका है। आज भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, मारकाट, चापलूसी, अन्याय, व्यक्ति के नैतिक मूल्यों का हनन, स्वार्थपूर्ति आधुनिक राजनीति के पर्याय बन चुके हैं। साहित्य समाज से संबंधित होने के कारण राजनीति से भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित होता है। राजनीति के बिना राष्ट्र का संगठित रहना असभंत है। समाज तथा राष्ट्र इसी से संचालित होते है।***

----------X----------

परशुराम शुक्ल के मतानुसार- "भारत में राजनीति चेतना सांस्कृति चेतना की अनुगामिनी होकर आई। राजा राममोहन राय, स्वामी, दयानंद, विवेकानंद आदि जो हिन्दू नावोत्स्थान के नेता हुए उनके विचारों के प्रभाव स्वरूप समाज में अपने धर्म और संस्कृति के प्रति आस्था उत्पन्न हुई, गौरवशाली अतीत के प्रति सम्मान की भावना आई और विदेशी शासकों की भौतिकता प्रधान संस्कृति की तुलना में अपनी आध्यात्मिकता की श्रेष्ठा ने भारतीयों के राजनीतिक असंतोष को शांत किया।''1

राजनीति शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है:- राज + नीति। 'राज' से अभिप्राय राज्य से है और नीति का अर्थ संदर्भ 'नियम' से है। राजनीति शब्द अंगे्रजी के च्वसपजपबे का पर्याय है, जिसका संबंध राजधर्म और राजशास्त्र से स्थापित किया गया है। हिन्दी शब्द सागर में राजनीति की व्याख्या इस प्रकार है- "राजनीति वह नीति है। जिसका सहारा लेकर शासक अपने राज्य की रक्षा और शासन की पद्धति को दृढ़ करता है''2 आधुनिक हिन्दी साहित्य के युगीन संदर्भो की यदि राजनीति परिपे्रक्ष्य में विश्लेषित किया जाए तो स्पष्ट हो जाऐगा कि- साहित्य पर प्रत्येक महत्वपूर्ण राजनीति घटना, और क्रिया-कलापों का प्रभाव अवश्य पड़ता है।

उदय प्रकाश एक सुप्रसिद्ध संवेदनशील, प्रयोगशील कथाकार एवं गहन समाजशास्त्रीय चिन्तन मनन करने वाले हिन्दी साहित्यकारों की अग्रिम श्रेणी में स्थान रखते है। उदय प्रकाश ने अपने लेखन का आरम्भ एक काव्य कें रूप में किया, जिसमें उनको ख्याति प्राप्त हुई। परंतु काव्य रचना करने के साथ-साथ कहानियों में भी काफी नाम कमाया है। उन्होंने कहानी के बोध और विन्यास को बदलते हुए उसे विलक्षण प्रभावों से सम्पन्न कर दिया। उन्होंने अपने परिवेश को सूक्षम दृष्टि से देखा है राजनीति पक्ष ने उदय प्रकाश के चित को अपनी ओर आकर्षित किया है। एक घर की राजनीति से लेकर अन्तराष्ट्रिय स्तर तक की राजनीति पर उनकी पैनी दृष्टि रही है। उदय प्रकाश राजनीति के हर छोटे से छोटे पहलू पर अपनी नजर रखते है। और उनको अपनी कविताओं के माध्यम से हमारे (पाठको) समक्ष रखते हैं। उनकी रचनाओं का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि साहित्यकार ने देश-विदेश में घटित होने वाली सभी घटनाओं को अपने साहित्य में स्थान दिया है।

राजनीति जिस रूप में होनी चाहिए, आज वह उस रूप में मौजूद नहीं है। आज की राजनीति तो केवल शोषण एवं स्वार्थपूर्ति की रह गई है। भ्रष्ट नेताओं तथा राजनीतियों की कुटिल चाल चारों तरफ से अपने पैर पसार रही है। जिसके अन्दर आम आदमी फँसता ही जा रहा है। आज की कुव्यवस्था के कारण ही समाज टूट-टूट कर बिखर रहा है। राजनीति प्रभावों की सभी प्रतिक्रयाओं को लेखक ने अन्तःकरण की गहरी संवेदनाओं तक महसूस किया है। यथा'' उदय प्रकाश की कविताओं में राजनीति समझ बहुत गहरी है, विशेष रूप से सता के चरित्र को उजागर करने में जो दक्षता

www.ignited.in

उन्हे हासिल है, वह दुर्लभ है। सता केवल धर्म और राजनीति की नहीं होती।, समाज, संस्कृति और ज्ञान की भी सताएं होती है और इन सभी सताओं के समुच्चय से ही वह वर्चस्वशाली वर्ग बनता है, जिसकी क्रुरता के शिकार आम जन होते है।"3

आज की राजनीति पाखंड़ी भ्रष्ट नेताओं एवं चुनाव के झूठे वादों की है। चुनाव के समय पर नए-नए दलों का निर्माण किया जाता है। किंतु कुर्सी हाथ आते ही अपने ही मुँह द्वारा किये गए वादों को भूल जाते है। भ्रष्ठ नेता लोग मानवीय शक्ति को दुर्बल करने के लिए नये रास्ते खोजते रहते है, कैसे लोगों को कमजोर बनाया जा सके ताकि न चाहते हुए भी लोग उनके प्रति आकर्षित हो। नेता उस समय वही बाते करते है जो जनता को पसंद होती है। इसी प्रकार उदय प्रकाश ने अपनी कविताओं के माध्यम से भ्रष्ट नेताओं तथा चुनाव की कुव्यवस्था पर प्रकाश डाला है और राजनीति के षडयंत्रों से बचने के लिए आम जनता को जागरूक भी करते है। उदय प्रकाश ने अपनी कविता 'वैरागी है आया गाँव' में चुनाव की कुव्यवस्था का वर्णन किया है।

तुम्हारी आँखो की जगह पर,

खाली कटोरे हैं तुयके-पियके काँसे के,

जिसमें छाछ है

और छाछ में महाजन का, ठेकेदार का,

चैधरी का, हाकिम का,

हुक्काम का, नेता का,

मन्त्री का, सन्तरी का, पुलिस का,

सेना का, ठाकुर का, बाह्महन का ,

देश का विदेश का,

धर्म का, तन्त्र का सता का,

यानी दूसरे-दूसरे लोगो का

पाप थरथराता है"4

उपर्युक्त पंक्तियों में 'थरथराता हुआ पाप' वर्तमान की कुव्यवस्था यानि चुनावी षड़यंत्रों का कांपता सत्य है। जनता के द्वारा चुने गए नेता ही उनका शोषण करते है। लोकतांत्रिक व्यवस्था का स्वरूप अजकल कुछ ऐसा है जिसमें भ्रष्टाचार का बोलबाला है। उदय प्रकाश इस भ्रष्टाचार की व्याख्या करने हेतु कहानी एवं कविता को अलग-अलग ढंग से गढ़ते है। क्योंकि भिन्न-भिन्न रचनाकारों की 'दृष्टि' जीवन को देखने की अलग होती है उदय प्रकाश ने अपनी कविताओं और कहानियों में राजनीति के प्रत्येक पहलू को खुलकर उजागर किया है कभी सीधे-सीधे शब्दों के माध्यम से, तो कभी व्यंग्यात्मक भाषा शैली के द्वारा हमारे समक्ष रखा है।

आज ऐसी व्यवस्था का निर्माण कर दिया गया है जहाँ चारो तरफ खून-खराबा, भ्रम अपराध, लालच, दंगे ही देगें है। पाल गोमश सरकार द्वारा चलाई जा रही रणनीति एवं परियोजनाओं के बारे में सोच सोचकर चिन्तित हो उठता है। प्रत्येक समस्या के लिए परियोजना बनाई जाती है, किंतु केवल कागजी दिखावे के लिए। इन योजनाओं को जिसके हित के लिए चलाया गया है, उन तक तो इन योजनाओं का लाभ पहुँच ही नहीं पाता है। ऊपर से नीचे तक आते आते ही वह बीच में खत्म हो जाता है। इन परियोजनाओं का लाभ तो भ्रष्ट अधिकारी ही उठाते है। उदय प्रकाश परियोजना और राजनीति भ्रष्टाचार को अधूरे सत्य का वर्णन अपनी रचना के माध्यम से करते है। यथा "'पाल गोमरा ने उस रात एक अजीबो-गरीब नजारा देखा। वे आधी रात अपने स्कूटर के पास खडे होकर उसकी त्वचा को अपनी हथेलियों से पोंछे रहे थे, तभी उनकी निगाह ऊपर टंगे हुए सूटकेस की और गई। उसका ढ़क्कन थोड़ा सा खुला हुआ था। और इंड़िया गेट से एक विशाल सीढ़ी ऊपर की और गई हुई थी। इस पर लोग चीटियों, चूहों और छिपकलियों की तरह रेंग रहे थे। वे उस सूटकेस तक जाते और अपने दाँतों की गड्डियाँ दबाकर नीचे कूद जाते। उनकी पीठ पर कागज की छोटी-छोटी चिप्पियाँ चिपकी भी, जिन पर ग्रामीण विकास योजना रोजगार, आबास, सड़क, साक्षरता, प्लेग, गरीबी चेचक परिवार कल्याण, राहत, भूकंप, पयविरण, शौचालय, संस्कृति, एडस साहित्य आदि लिखे हुऐ थे। हर शब्द के उन्त में अतः सर्ग था जो हर चिप्पी पर मौजूद था- परियोजना"5

सरकार लोगों के हीत के लिए बनाई जाती है न कि आम आदमी का शोषण करने हेतु। सरकार की नीतियाँ व सुविधाएँ जन कल्याण के लिए होने चाहिए। सभी सुविधाओं जैसे चिक्त्सिा, बिजली, पानी आदि पर सभी लोगों का समान अधिकार होना चाहिए चाहे वह गरीब हो या अमीर। उदय प्रकाश ने अपनी एक कहानी में दर्शाया है कि 'एम्स' चिक्त्सिा केन्द्र है। यह भारत का सबसे बड़ा चिकित्सा केन्द्र माना जाता है। उसमें इलाज करना इतना आसान काम नहीं है यहाँ केवल पूंजीपति, अमीर वर्ग, तथा जान पहचान वालों के लिए ही सुविधाएँ उपलब्ध है। 'एम्स' से संबंधित एक ऐसी ही परेशानी

www.ignited.in

का सामना 'मैगोसिल' कहानी के पात्र चन्द्रकांत और शोभा को भी करना पड़ता है। जब वे अपने बड़े सिर वाले बेटे सूर्यकान्त का इलाज कराने एम्स चिक्त्सिालय ले जाते है। यहाँ लेखक ने एक आम आदमी की बीमारी संबंधित समस्या को दिखया जिसके पास न तो अधिक धन दौलत और न हि कोई ऊपरी तौर पर जान पहचान है। इसलिए चन्द्रकांत और शोभा नामक पात्र को अपने बेटे के इलाज के लिए अनेको कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। उदाहरण स्वरूप इस बात को स्पष्ट किया जा सकता है कि "एम्स यानी ऑल इंडिया इस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल सांइस एक तो जहांगीर पुरी से दूर पड़ता था। सरकारी होने को कारण वहाँ सोर्य-सिफारिश बहुत चलती थी। मंत्रियों, ऊंचे अफसरों या उन तक पहुँच रखने बाले अमीर और साख-सूख वालो का इलाज ही वहां होता। चद्रकांत और शोभा सूर्यकांत को गोद में उठाए घंटो-घंटो वहाँ ओ॰पी॰डी॰ में खडे रहते। या तो उनका नंबर नहीं आता और अगर आता भी तो डॉक्टर उस भीड में सूर्यकांत को लापरवाही से देखकर उन्हें अगली तारीख दे देता।"6

आज वर्तमान में राजनीति व्यवस्था का ढाँचा ऐसाा है कि जिससे न्यायालय भी पूरी तरह से प्रभावित है। सताधारी लोगों के हाथ बहुत लम्बे होते है वो कैसे भी करके अपने भ्रष्ट लोगों को बचा ही लेते है। प्रति-दिन ऐसी खबरें अखबरों में देखने को मिल ही जाती है। अनेक आयोग बनाये जाते है, जाँच कमेटियाँ बनाई जाती है परंतु उनसे कुछ नहीं होता है वह ऐसे ही व्यर्थ जाती है। आज गुंडागर्दी इसलिए ज्यादा बढ़ गई है क्योंकि उन्हें किसी प्रकार का कोई डर नहीं, भय नहीं है। घोर अपराध करने पर भी अपराधी को नाममात्र की सजा दे दी जाती है बस। उदय प्रकाश ने अपनी कहानी 'पीली छतरी वाली लड़की' में इस प्रकार की समस्या का वर्णन किया है। इस में लेखक ने दर्शाया है कि किस तरह विश्वविद्यालय में बढ़ती गुण्डागर्दी कुव्यवस्था का जीता जागता परिणाम है। क्योंकि गुण्डों को सताधारी लोगों एवं राजनैतिक पार्टियों का सहयोग मिलता रहता है। इस बात को लेखक ने अपनी कहानी 'पीली छतरी वाली लड़की' के माध्यम स्पष्ट किया है यथा" इन लोगो के संबंध स्थानीय राजनीतिक नेताओं, पुलिस के साथ होते ही थे, विश्वविद्यालय के प्रशासन, छात्र, अध्यापक, राजनीति में भी उनकी खासी दखल होती थी,"7 यहा उदाहरण द्वारा वर्तमान समय में प्रशासन में व्याप्त विभिन्न समस्याओं का चित्रण उदय ने अपनी कहानी में किया है विश्वविद्यालय का वाइस चांसलर अशोक कुमार अग्निहोत्री अपने पद का मनचाहा दुरूप्रयोग करता है। और वह विश्वविद्यालय में बहुत से पदों पर ऐसे लोगों को नियुक्त करता है जो उसके योग्य ही नहीं होते है। इतना ही नहीं वह विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्धारित-नियमों की भी अवहेलना करता है। उसने अपने कुलपतित्व के कार्यकाल में सिर्फ अपने चापलूसों, रिश्तेदारो, प्रेमिकाओं को ही प्रोमोट किया हुआ है।

किसी भी देश का समाज उसकी उन्नति और विकास हेतु आधारशिला का काम करता है। यदि समाज में दुष्प्रवृत्तियाँ स्थान ले लेती है तो समझ लो समाज का पतन होना निश्चित हो जाता है। स्वार्थपूर्ति की भावना, रिश्वतखोरी इसी तरह की कुप्रवृत्तियाँ है। जो धीरे-धीरे समाज व देश को अन्दर से खौखला कर देती है। आज कोई भी संस्था हो किसी भी प्रकार का प्रशासन हो इस बीमारी से अछूता नहीं है। आज हमें कोई भी काम करवाना हो तो उसे पहले हमें पैसे का बनदौबस्त करना पड़ता है तभी हमारा काम हो सकता है। रिश्वत देना हमारी पसंद या नापसंद पर निर्भर नहीं करता बल्कि यह हमारी मजबूरी बन जाती है। राजनीति के क्षेत्र में तो सांसदों और विद्यायकों को पैसा देखकर खरीद लिया जाता है। उदय प्रकाश की कहानियों में सामजिक कुरीतियों का सम्यक चित्रण किया गया है। 'मोहनदास' नामक कहानी में रिश्वत केवल काम करने के लिए नहीं, अपितु एक व्यक्ति को नौकरी देने के लिए दी जाती है। मोहन दास एक होनहार प्रतिभावान युवक है, जो॰बी॰ए॰ की परीक्षा में अच्छे अंक लेकर पास होता है। उसने ओरियंटल कोल साइंस में सुपरवाईजर की नौकरी के लिए आवेदन किया। जहाँ उसका चुनाव भी किया जाता है, किंतु उसके स्थान पर बिसनाथ के बाप नागेद्र नाथ ने भर्ती दफ्तर के बाबू को पटाकर मोहन दास वाली नौकरी का लैटर अपने आवारा बेटे बिसनाथ को दिलवा देता है। ऐसा सब कुछ पैसे के बलबूते पर किया गया। यहाँ पर लोक प्रचलित बात सही बैठती प्रतीत होती होती है। जिसकी लाठी उसकी भैंस 'अर्थात जिसके हाथ में पैसा है, उसके हाथ में सबकुछ है। उदय प्रकाश अपनी कहानी 'मोहनदास' में मोहनदास नामक पात्र के माध्यम से एक गरीब आम आदमी की बेबशी, लाचारी, एवं दयनीय स्थिति का वर्णन करते है। किस प्रकार एक गरीब युवा किस तरह अपनी महनत, परिश्रम से शिक्षा ग्रहण करता किंतु उसके स्थान पर अयोग्य व्यक्ति को महत्व दिया जाता है। लेखक ने मोहनदास नामक पात्र के द्वारा प्रत्येक गरीब व्यक्ति की अन्तःकरण की पीड़ा एवं संवेदना को दर्शाया है। "अगर उसके पास कुछ नकदी जमा पूंजी होती तो किसी दलाल से मिलकर रूपये ऊपर तक पहुंचा कर वह यह नौकरी पा सकता था।"8

उपर्युक्त पक्तियों के माध्यम से स्पष्ट होता है कि लेखक ने समाज में फैलती जा रही राजनीति, संकीर्ण विचाराधारा, रिश्वतखोरी जैसी बीमारी की ओर संकेत किया है। आज यह बीमारी चारो तरफ अपना जाँल फैली दिख रही हे। यह केवल साधारण जनता तक सीमित नहीं, बल्कि विधायकों, सांसदो

www.ignited.in

तक की जड़ो तक पहूँच चूकी है। इन सभी बातो को उदय प्रकाश ने अपनी कहानियों में उजागर करके हमारा ध्यान राजनीति के विभिन्न पहलूओं की दिलाया है ताकि इसको सही दिशा में ले जाए जा सके। अत- उदय प्रकाश ने अपने साहित्य में राजनीति एवं राजनेताओं का यथार्थ चित्रण किया है। बिना किसी भय व डर के खुलकर राजनीति तथा नेताओं के मखौटों को उतार फैंका है। इतना ही नहीं, कभी सीधे-सीधे शब्दों के बाणों से भ्रष्ट लोगों को बाँधते है, तो कभी व्यंग्यात्मक शैली में उनका विरोध करते प्रतीत होते है। उन्होने भ्रष्टाचार एवं राजनीति के कटू सत्य को पाठको के समक्ष रखा है।

संदर्भ

1. परशुराम शुक्ता 'विरही' आधुनिक हिन्दी काव्य और यथर्यवाद पृ. 118, प्रकाशन रामबाग कानपुर 1966
2. सं. श्यामसुन्दरदास, हिन्दी शब्द साहगर, पृ. 451, भाग 451
3. सं. ज्योतिष जोशी, सृजनात्मकता के आयाम, उदय प्रकाश पर (प्रकासन नयीकिताब, दिल्ली 2013)
4. उदय प्रकाश, अबूतर-कबूतर पृ. 101 प्रकाशन स्वर्ण जयंती, दिल्ली 2005
5. उदय प्रकाश, पॉल गोमरा का स्कूटर पृ. 55 वागी प्रकाशन नई दिल्ली 2006
6. उदय प्रकाश, मैंगोसिल पृ. 127 पेगुइन बुक्स इंडिया, नई दिल्ली 2006
7. उदय प्रकाश, 'पीली छतरी वाली लड़की' पृ. 19 वाणी प्रकाश, नई दिल्ली 2011
8. उदय प्रकाश, मोहनदास पृ. 21 वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2009

Corresponding Author

Poonam*

M.Phil in Hindi

poonam.bidlhan1@gmail.com